कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 11, (अप्रैल, 2024)
पृष्ठ संख्या 37–38

जायद उर्द की बुवाई

शुभ्रांशु सिंह [1] देवेश पाठक[2] अमन सिंह[3] एवं राहुल यादव[4]

[1]परास्नातक छात्र, सस्य विज्ञान विभाग,
आचार्य नरेंद्र देव कृषि एंव प्रौधोगिकी विश्वविधालय कुमागंज अयोध्या
[2]विषय वस्तु विशेषज्ञ मृदा विज्ञान विभाग कृषि विज्ञान केंद्र अमेठी
[3]विषय वस्तु विशेषज्ञ पादप एंव अनुवंशिकी विज्ञान विभाग कृषि विज्ञान केंद्र अयोध्या
[4]परास्नातक छात्र, सस्य विज्ञान विभाग रामा विश्वविधालय कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

Email Id: – dvsh2498@gmail.com

उर्द प्रदेश की एक मुख्य दलहनी फसल है। इसकी खेती मुख्य रूप से खरीफ में की जाती है लेकिन जायद में समय से बुवाई सघन पद्धतियों को अपनाकर करने से अच्छी पैदावार प्राप्त की जा सकती है।

भूमि तथा उसकी तैयारी :

जायद में उर्द की खेती के लिए हल्की दोमट, तथा मटियार भूमि उपयुक्त रहती है। पलेवा करके एक दो जुताई देशी हल अथवा कल्टीवेटर से करके खेत तैयार हो जाता है। हर जुताई के बाद पाटा लगाना आवश्यक है जिससे नमी बनी रहे। पावर टिलर या ट्रैक्टर से खेत की तैयारी जल्दी हो जाती है।

प्रजातियाँ :

अच्छी उपज लेने के लिए जल्दी पकने वाली निम्न प्रजातियों की बुवाई करें:

1. **पन्त यू–19:** यह प्रजाति 75–80 दिन मे पाक कर तैयार हो जाती है। इस प्रजाति के पौधों से कुल 8–9 कु प्रति हैक्टेयर उपज प्राप्त होती है, साथ ही यह प्रजाति पीला चित्रवर्ण के प्रति अवरोधी होती है। से संपूर्ण उत्तर प्रदेश मे बोई जाती है।
2. **पन्त यू–35:** इसके पकने की अवधि 75–80 दिनों की होती है तथा इसकी उपज 8–9 कुंतल प्रति हैक्टेयर होती है, और यह पीला मोजैक के प्रति अवरोधि होती है। इसे भी पूरे उत्तर प्रदेश मे लगाई जाती है।
3. **टा.–9:** इस प्रकार की प्रजाति 75–80 दिन मे पाक के तैयार हो जाती है, तथा इसकी उपज 6–8 कुंतल प्रति हैक्टेयर होती है। यह पीला मोजैक के प्रति सहनशील होती है।
4. **नरेन्द्र उर्द–1:** इसके पकने की अवाधि 75–80 दिन की होती है, तथा कुल ऊपज 8–10 कुंतल होती है। से संपूर्ण उत्तर प्रदेश मे उगाई जाती है।
5. **आजाद उर्द–1:** इसके पकने की अवाधि 75–80 दिन की होती है। कुल उपज 8–10 कुंतल प्रति हैक्टेयर होती है और से पूरे उत्तर प्रदेश मे उगाई जाती है।

बीज की मात्रा :

उर्द का पौधा जायद में कम बढ़ता है अतः 15–18 किग्रा. बीज प्रति हे. बुवाई के लिए प्रयोग की जाती है।

बुवाई की विधि :

उर्द की बुवाई हल के पीछे कूड़ों में करनी चाहिए। कुंड से कूड़ की दूरी 20–25 सेमी, रखना चाहिए। बुवाई के तुरन्त बाद पाटा लगा देना चाहिए।

बुवाई का समय :

फसल की बुवाई समय से करने पर कीट तथा रोग की न्युनतम उपस्थिति होती है। फसल की

बुवाई करने का उपयुक्त समय 15 फरवरी से 15 मार्च तक का होता है।

उर्वरक:

15–20 किलोग्राम नत्रजन की मात्रा एवं 40 किलोग्राम फास्फोरस तथा 20 किग्रा. गन्धक प्रति हेक्टर की दर प्रयोग करें। फास्फोरस के प्रयोग से दाने की उपज में विशेष वृद्धि होती है। उर्वरकों की सम्पूर्ण मात्रा बुवाई के समय कुंडों में बीज से 2–3 सेमी. नीचे देनी चाहिए। यदि सुपरफास्फेट उपलब्ध न हो तो 1 कुन्तल डाई अमोनियम फॉस्फेट तथा 2 कुन्तल जिप्सम का प्रयोग बुवाई के समय किया जाना चाहिए। सामान्यतः उर्वरकों का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर करना चाहिए।

सिंचाई

पहली सिंचाई 30–35 दिन बाद करनी चाहिए। पहली सिंचाई बहुत जल्दी करने से जड़ों तथा ग्रन्थियों का विकास अच्छे प्रकार से नहीं होता है। बाद में आवश्यकता के अनुसार 10–15 दिन के बाद हल्की सिंचाई करते रहें। स्प्रिंकलर से सिंचाई अत्यधिक लाभदायक होता है।

खरपतवार नियंत्रण

खरपतवार के नियंत्रण के लिए समय से निराई गुड़ाई कर देनी चाहिए।

फसल सुरक्षा

उर्द में प्रायः पीले चित्रवर्ण (मोजैक) रोग का प्रकोप होता है। इस रोग के विषाणु मक्खी द्वारा फैलते है।

रोकथामः इसके नियंत्रण के लिए समय से बुवाई करनी चाहिए। पीला चित्र वर्ण (मोजैक) अवरोधी प्रजातियों की बुवाई करनी चाहिए।

5 से 10 प्रौढ़ मक्खी सफेद मक्खी प्रति पौध की दर से दिखाई पड़ने पर मिथाइल ओ–डिमेटान 25 ई.सी. या डाईमेथोएट 30 ई.सी. 1 लीटर प्रति है. की दर से 600–800 ली. पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।

थिप्स : इस कीट के शिशु एवं प्रौढ़ दोनों पत्तियों एवं फूलों से रस चूसते है। भारी प्रकोप होने पर पत्तियों से रस चूसने के कारण वे मुड़ जाती है तथा फूल गिर जाते है जिससे उपज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

रोकथामः इसकी रोकथाम के लिए मिथाइल–ओ–डिमेटान 25 ई.सी. 1 लीटर या डायमिथोएट 30 ई.सी. 1 लीटर प्रति हे. की दर से 600–800 ली. पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए।

हरे फुदके : इस कीट के प्रौढ़ एवं शिशु दोनो पत्तियों से रस चूस कर उपज पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं।

रोकथामः चिप्स के लिए बताये गये कीटनाशियों के प्रयोग से हरे फुदके का नियन्त्रण किया जा सकता है।

फलीवेधक : किन्ही–2 वर्षों में फली वेधकों से फसल को काफी हानि होती है। इनके नियंत्रण के लिए इन्डोसल्फान 35 ई.सी. या क्यूनालफास 25 ई.सी. 1.25 लीटर प्रति हे. की दर से 600–800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।

कटाई एवं भण्डारण :

फसल पूरी तरह पक जाने पर जब फलियाँ काली हो जाती है तो कटाई कर लेनी चाहिए। उर्द की फलियां एक साथ ही पक जाती हैं तथा फटती नहीं है। अतः फसल की कटाई एक साथ की जा सकती है। भण्डारण के लिए नीम की पत्तियों का भी प्रयोग करना चाहिए।

प्रमुख बिन्दु :

- उर्द की बुवाई 15 फरवरी से 15 मार्च तक कर लेना उचित रहता है।
- सुपर फास्फेट का प्रयोग बेसल ड्रेसिंग के रूप मे करने पर अधिक लाभदायक रहता है।
- पहली सिंचाई बुवाई के 25–30 दिन बाद करें।
- बीजोपचार राइजोबियम कल्चर एवं पी. एस.वी. से अवश्य करें।
- यदि आलू के बाद उर्द की फसल ली जाती है तो नत्रजन के प्रयोग की आवश्यकता नहीं है।